# FULL STOP - 36

**अव्यक्त बापदादा** (21.02.1983) **:-**

➳ _ ➳ प्रश्न:- शमा पर फिदा होने वाले सच्चे परवाने की निशानी क्या होगी?

➳ _ ➳ उत्तर :- शमा पर जो फिदा हो चुके वह स्वयं भी शमा के समान हो गये। समा गये तो समान हो गये।

➳ _ ➳ जैसे शमा सबको रास्ता बताती है ऐसे शमा समान रोशनी द्वारा रास्ता बताने वाले। रास्ते में भटकने वाले नहीं।

➳ _ ➳ यह करें वा वह करें, यह क्वेश्चन समाप्त। फुलस्टाप आ जाता तो याद और सेवा इसी में रहो, चक्र सब समाप्त। कोई भी चक्कर रहा हुआ होगा तो चक्र लगाने जायेंगे। कभी सम्बन्ध का चक्र, कभी अपने स्वभाव संस्कार का चक्र, अगर सब चक्र समाप्त हो गये, पूरा फिदा हो गये तो फिदा होना अर्थात् जल मरना। उन्हों को सिवाए शमा के और कुछ नहीं।

---

➢➢ फ़िदा होना अर्थात

➳ _ ➳ जल मरना

➳ _ ➳ बलिहार जाना

➳ _ ➳ सम्पूरण समर्पण

➳ _ ➳ सर्वस्व स्वाहा कर देना

➳ _ ➳ मिट जाना , समा जाना, एक हो जाना

➳ _ ➳ स्वयम को हसती को मिटा देना

➳ _ ➳ सम्पूरण रूप से स्वयं को न्योछावर कर देना

➳ _ ➳ स्वय के जीवन को अर्पित कर देना

➳ _ ➳ सब कुछ उस पर छोड़ देना

→ अब तुम चलाओ मेरे जीवन को

→ वो जहां रखे, जैसे रखे, जिस हाल में रखे

---

➢➢ 7 प्रकार के समर्पण

➳ _ ➳ तन का समर्पण

→ यह देह हमारी नहीं है... प्रभु अमानत है

- पर इस देह को जीवंत रखना और स्वस्थ रखना हमारा कर्तव्य है

→ यह देह भोग विलास के लिए नहीं है

- तपस्या करने के लिए कुटिया है

➳ _ ➳ मन / संकल्पों का समर्पण

→ यह बहुत बड़ी साधना है

- मन सिर्फ तभी शांत हो सकता है जब मन का मैं मैं करना बंद हो जाए

➳ _ ➳ धन का समर्पण

→ धन कितना दिया जा रहा है... इससे कहीं ज्यादा महत्वपूरण है की किस भावना से दिया जा रहा है...

→ गुप्त दान का महत्व है

- एक हाथ से दो तो दुसरे हाथ को भी पता न चले

➳ _ ➳ बुधी का समर्पण

→ अपने अहंकार को अर्पित करो

- मेरी सभी विशेषताएं प्रभु प्रसाद है

➳ _ ➳ संस्कारों का समर्पण

→ जिस आदत / व्यक्ति से छूटना है तो उसके नुकसानों को चिंतन कीजिये... उसके प्रति घृणा उत्पन्न करनी होगी..

- किसी व्यक्ति / वस्तु के न मिलने पर अगर आपको बेचैनी होती है तो वह आपकी लत है .. वह Addiction है... वह तलब है...

➳ _ ➳ कर्म और कर्म के परिणामो का समर्पण

→ सेवा की सफलता और असफलता दोनों को बाप को अर्पित करो

➳ _ ➳ समबन्ध समपर्क का समर्पण

→ सर्व संबंधो का अनुभव सिर्फ एक बाप से

---

➢➢ मन के दो स्वभाव है

➳ _ ➳ दूसरों को गुलाम बनाना

→ दूसरों को समर्पण करवाना

- भावनात्मक रूप से गुलाम बनाना

➳ _ ➳ खुद गुलाम बन जाना

→ खुद समर्पित हो जाना

- भावनात्मक रूप से गुलाम बनना

➳ _ ➳ बंधनो को तोड़ने के लिए

→ प्रेम स्वरुप नहीं

- विकराल स्वरुप बनना होगा
- काली स्वरुप बनान होगा

---